



|| श्री गणेशाय नमः ||

## राशिफल

Sunil Kumar Suman

07/06/1999 01:07

Khanpur, Jhalawar, Rajasthan, India

द्वारा उत्पन्न

 VedicAstroAPI

# बुनियादी ज्योतिषीय विवरण

## बुनियादी विवरण

जन्म की तारीख	07/06/1999
जन्म का समय	01:07
जन्म स्थान	Khanpur, Jhalawar, Rajasthan, India
अक्षांश	24.729839500000004
देशान्तर	76.3948484
समय क्षेत्र	5.5
अयनांश	23.85387214275567
सूर्योदय	05:37:00
सूर्यास्त	19:07:59

## घटक चक्र

महीना	गुरु
तिथि	3 (तृतीया), 8 (अष्टमी), 13 (त्रयोदशी)
विपरीत लिंग लग्न	धनु
नक्षत्र	आर्द्र
भगवान	मंगल
समलिंगी लग्न	मिथुन
Tatva	अग्नि
रासी	धनु

## पंचांग विवरण

तिथि	अष्टमी
योग	विष्कंभ
नक्षत्र	शतभिषा
करण	बलवा

## ज्योतिषीय विवरण

वर्ण	शूद्र
वास्या	मानव
योनि	घोड़ा
तिथि	कृ.अष्टमी
नक्षत्राधिपति	राहु
नक्षत्र	शतभिषा
प्रबल	कुंभ
Tatva	वायु
करण	कौलव
नक्षत्र स्वामी	शनि
दलदल	सोना
नाम वर्णमाला	गो
रासी	कुंभ
नाड़ी	वात

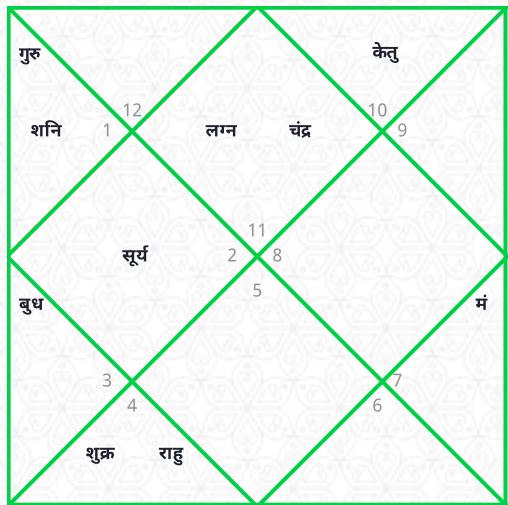
## ग्रहों की स्थिति

ग्रहों	आर	संकेत	डिग्री	साइन लॉड	नक्षत्र	नक्षत्राधिपति	घर
लग्नश	कुंभ	329.9122851554984		शनि	पूर्वभद्र(3)	बृहस्पति	1
सूर्य	वृषभ	51.81116847915403		शुक्र	रोहिणी(4)	चंद्रमा	4
चंद्रमा	कुंभ	317.3294769599247		शनि	शतभिषा(4)	राहु	1
मंगल	तुला	180.64024566751752		शुक्र	चित्र(3)	मंगल	9
बुध	मिथुन	65.78154761138413		बुध	मृगशिरा(4)	मंगल	5
बृहस्पति	मेष	2.308328755283771		मंगल	अश्विनी(1)	केतु	3
शुक्र	कैंसर	97.07146317423053		चंद्रमा	पुष्य(2)	शनि	6
शनि	मेष	17.876085985277456		मंगल	भरानी(2)	शुक्र	3
राहु	कैंसर	112.26648805158872		चंद्रमा	अश्लेषा(2)	बुध	6
केतु	मकर	292.26648805158874		शनि	श्रवण(4)	चंद्रमा	12

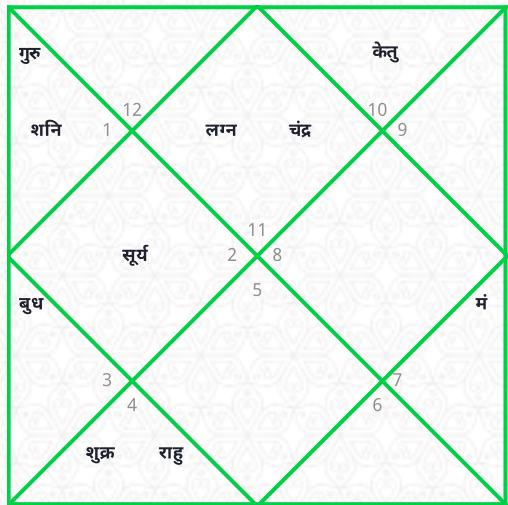
 <b>सूर्य</b> वृषभ रोहिणी(4) <b>नुकसानदायक</b>	 <b>चंद्रमा</b> कुंभ शतभिषा(4) <b>नुकसानदायक</b>	 <b>मंगल</b> तुला चित्र(3) <b>नुकसानदायक</b>
 <b>बुध</b> मिथुन मृगशिरा(4) <b>तटस्थ</b>	 <b>बृहस्पति</b> मेष अश्विनी(1) <b>अत्यधिक नुकसानदायक</b>	 <b>शुक्र</b> कैंसर पुष्य(2) <b>योगकारक</b>
 <b>शनि</b> मेष भरानी(2) <b>लाभकारी</b>	 <b>राहु</b> कैंसर अश्लेषा(2) <b>अशुभ</b>	 <b>केतु</b> मकर श्रवण(4) <b>अशुभ</b>

## राशिफल चार्ट

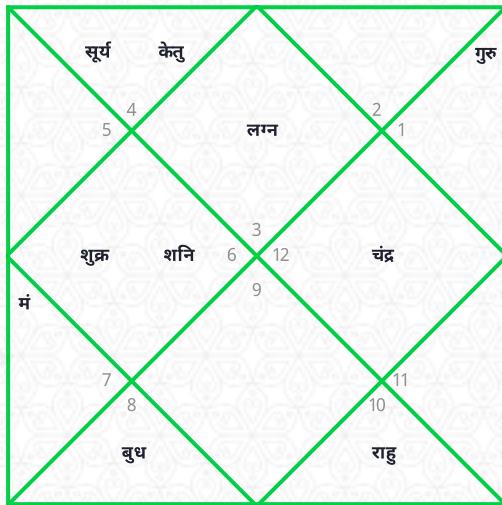
### लग्न कुंडली (जन्म कुंडली)



लग्न या लग्न, उस राशि की डिग्री है जो जन्म के समय पूर्वी क्षितिज पर उदित हो रही है। लग्न जन्म कुंडली में सबसे प्रभावशाली और महत्वपूर्ण राशि है। इस राशि को कुंडली का पहला घर माना जाएगा और अन्य घरों की गणना राशि चक्र की बाकी राशियों के अनुसार क्रम से की जाएगी। इस प्रकार, लग्न न केवल उदीयमान चिन्ह को चित्रित करता है, बल्कि चार्ट के अन्य सभी घरों को भी चित्रित करता है।



चंद्र कुंडली



नवमांश चार्ट(D9)

चंद्र चार्ट भविष्यवाणी का एक महत्वपूर्ण उपकरण है और ग्रह संयोजनों के परिणाम तब अधिक प्रमुख होते हैं जब योग या कुछ संयोजन चंद्रमा और लग्न चार्ट दोनों में होते हैं।

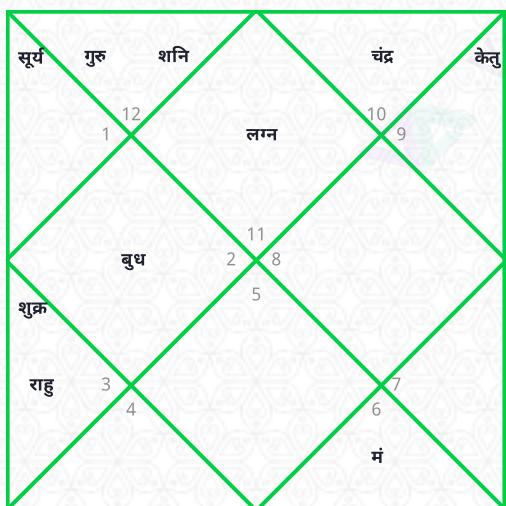
नवमांश चार्ट सबसे महत्वपूर्ण मंडल चार्ट है, नवमांश का अर्थ है एक विशेष राशि के नौ भाग जिसमें प्रत्येक अम्सा में 3 डिग्री और 20 मिनट होते हैं।

## हाउस क्यूस्प्स और संधि

प्रबल - 29.9123 मध्यआकाश - 1.9404

घर	संकेत	भाव मध्य	संकेत	Bhav Sandhi
1	कुंभ	29.9123	मेष	15.3411
2	मेष	0.7700	वृषभ	18.3693
3	वृषभ	5.9686	मिथुन	2.9891
4	मिथुन	1.9404	मिथुन	7.0844
5	मिथुन	27.9569	कैंसर	9.3052
6	कैंसर	22.7983	सिंह	11.3553
7	सिंह	29.9123	तुला	15.3411
8	तुला	0.7700	वृश्चिक	18.3693
9	वृश्चिक	5.9686	धनु	2.9891
10	धनु	1.9404	धनु	7.0844
11	धनु	27.9569	मकर	9.3052
12	मकर	22.7983	कुंभ	11.3553

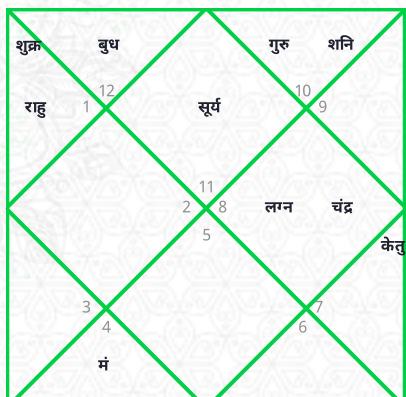
### चालिट चार्ट



हाउस क्यूस्प्स सदनों के लिए काल्पनिक सीमा रेखाएं हैं, उसी तरह जैसे साइन क्यूप्स साइन्स के लिए सीमा रेखाएं हैं। पुच्छल घर का सबसे महत्वपूर्ण और शक्तिशाली बिंदु होता है। शिखर पर स्थित ग्रहों का घर पर सबसे मजबूत प्रभाव और सबसे विशिष्ट अर्थ होता है।

## संभागीय चार्ट

**सूरज**



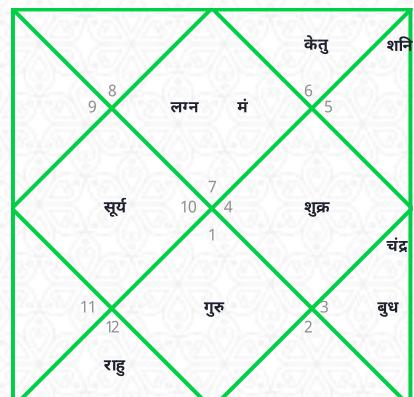
स्वास्थ्य, संविधान, शरीर

**होरा (D2)**



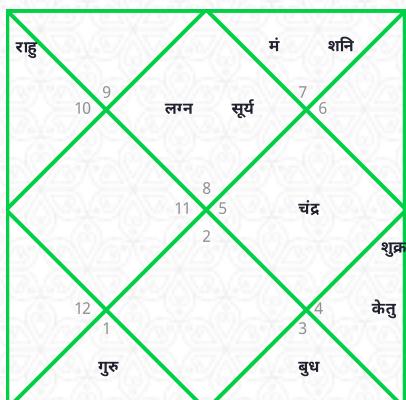
वित्त, धन, समृद्धि

**द्रेष्काण (D3)**



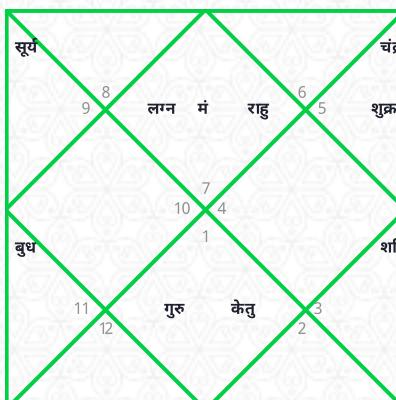
भाइयों बहनों

**चतुर्थमाश (D4)**



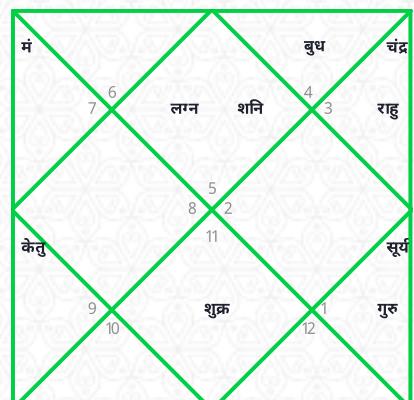
भाग्य, जातक का भाग्य

**पंचमांश (D5)**



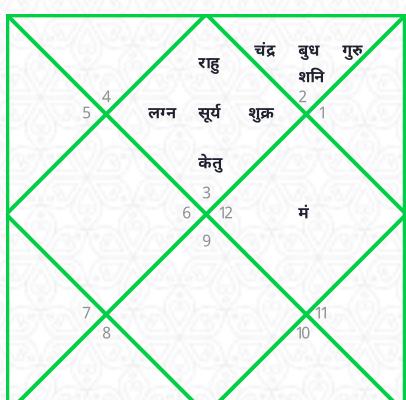
अध्यात्मवाद को दर्शाता है

**सप्तमांश (D7)**



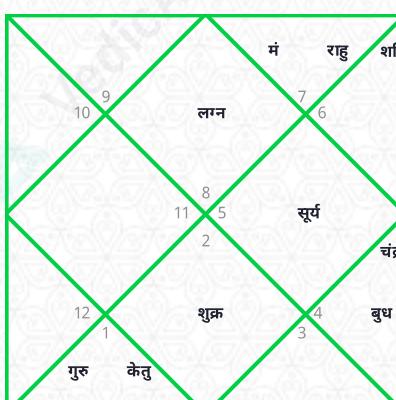
गर्भाधान, बच्चे का जन्म

**अष्टमांश (D8)**



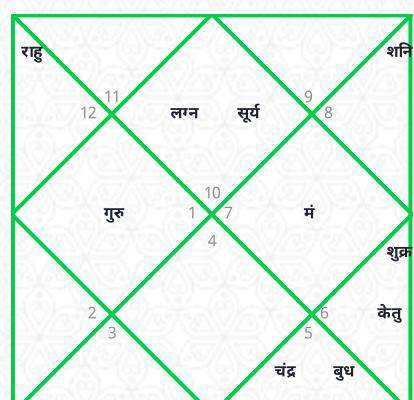
दीर्घायु दर्शाता है

**दशमांश (D10)**



आजीविका, पेशा

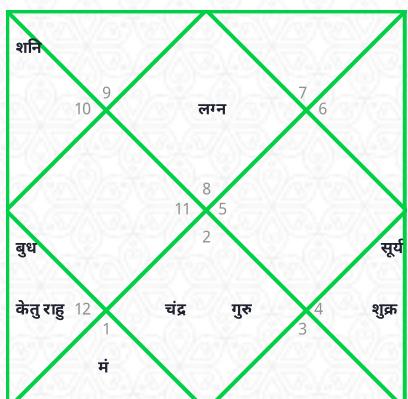
**द्वादश (D12)**



माता-पिता, पितृ सुख

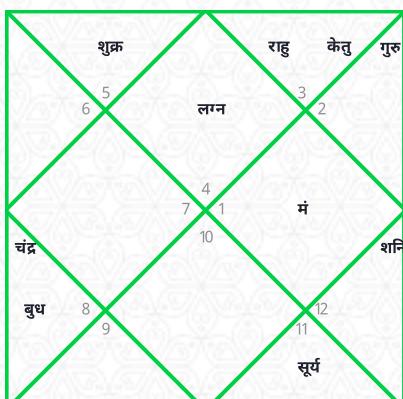
## संभागीय चार्ट

**घोडशमशा (D16)**



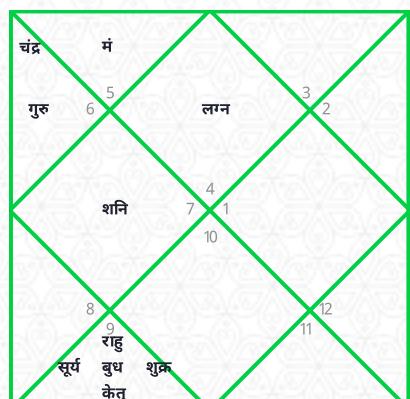
सुख, दुःख, संवहन

**विषमांश (D20)**



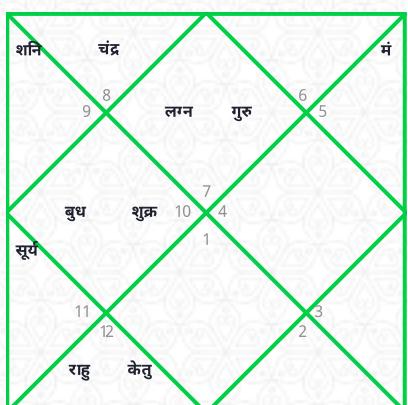
आध्यात्मिक प्रगति, पूजा

**चतुर्विंशमशा(D24)**



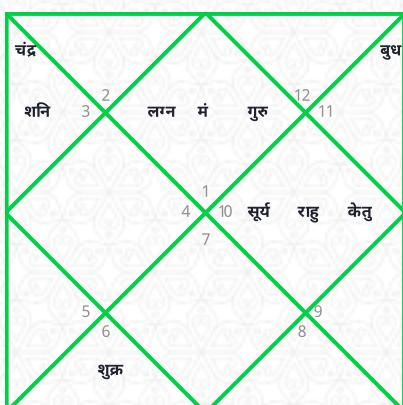
शैक्षणिक उपलब्धि, शिक्षा

**भासमा (D27)**



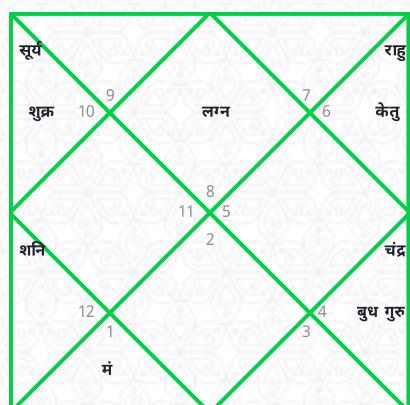
शारीरिक शक्ति, सहनशक्ति

**त्रिशमांशा (D30)**



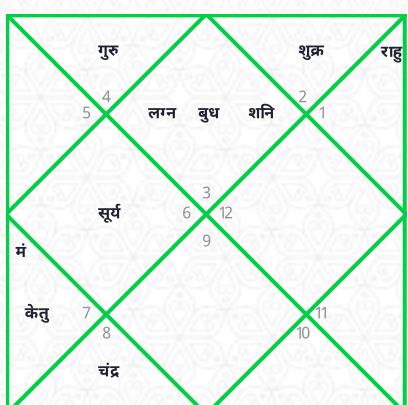
बुराई, जीवन की प्रतिकूलताएँ

**खण्डेमशा (D40)**



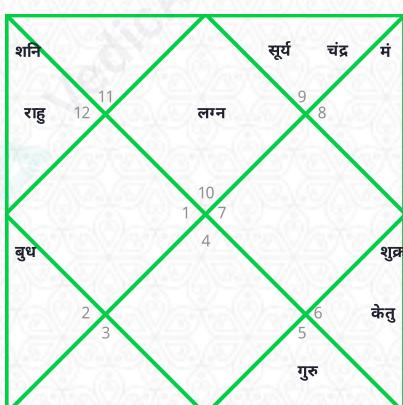
शुभ एवं अशुभ प्रभाव

**अक्षवेदांश (D45)**



जातक का चरित्र एवं आचरण

**षष्ठीमशा (D60)**



सामान्य खुशी दर्शाता है

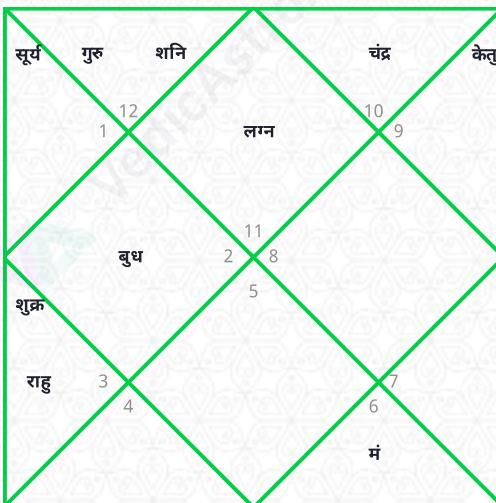
## केपी ग्रहों का विवरण

ग्रहों	आर	संकेत	डिग्री	भगवान पर हस्ताक्षर करें	घर
लग्नेश	False	मीन	330.01862542323715	बृहस्पति	1
सूर्य	False	वृषभ	51.91750874689275	शुक्र	3
चंद्रमा	False	कुंभ	317.43581722766345	शनि	12
मंगल	False	तुला	180.74658593525623	शुक्र	8
बुध	False	मिथुन	65.88788787912286	बुध	4
बृहस्पति	False	मेष	2.4146690230224976	मंगल	2
शुक्र	False	कैंसर	97.17780344196925	चंद्रमा	5
शनि	False	मेष	17.982426253016182	मंगल	2
राहु	True	कैंसर	112.37282831932745	चंद्रमा	5
केतु	True	मकर	292.3728283193275	शनि	11

ग्रहों	नक्षत्र	नक्षत्राधिपति	पर	उप भगवान	एसएस भगवान
लग्नेश	पूर्वभद्र	बृहस्पति	3	चंद्रमा	बृहस्पति
सूर्य	रोहिणी	चंद्रमा	4	शुक्र	बृहस्पति
चंद्रमा	शतभिषा	राहु	4	शुक्र	केतु
मंगल	चित्र	मंगल	3	बुध	शुक्र
बुध	मृगशिरा	मंगल	4	चंद्रमा	राहु
बृहस्पति	अश्विनी	केतु	1	शुक्र	शनि
शुक्र	पुष्य	शनि	2	बुध	शनि
शनि	भरानी	शुक्र	2	मंगल	केतु
राहु	अश्लेषा	बुध	2	चंद्रमा	चंद्रमा
केतु	श्रवण	चंद्रमा	4	शुक्र	बुध

## केपी हाउस क्यूस्प्स और चार्ट

घर	डिग्री	संकेत	भगवान पर हस्ताक्षर करें	नक्षत्र	नक्षत्राधिपति	उप भगवान	उप उप भगवान
1	0.5242	मेष	मंगल	अधिनी	केतु	चंद्रमा	राहु
2	35.7228	वृषभ	शुक्र	कृतिका	सूर्य	केतु	बृहस्पति
3	61.6946	मिथुन	बुध	मृगशिरा	मंगल	बुध	शुक्र
4	87.7111	मिथुन	बुध	पुनरवसु	बृहस्पति	बुध	शनि
5	112.5525	कैंसर	चंद्रमा	अश्लेषा	बुध	शुक्र	बृहस्पति
6	149.6665	सिंह	सूर्य	उत्तराफाल्गुनी	सूर्य	चंद्रमा	बृहस्पति
7	180.5242	तुला	शुक्र	चित्र	मंगल	राहु	बृहस्पति
8	215.7228	वृश्चिक	मंगल	अनुराधा	शनि	बुध	शुक्र
9	241.6946	धनु	बृहस्पति	मुला	केतु	बुध	केतु
10	267.7111	धनु	बृहस्पति	उत्तराषाढ़ा	सूर्य	शुक्र	राहु
11	292.5525	मकर	शनि	श्रवण	चंद्रमा	चंद्रमा	बृहस्पति
12	329.6665	कुंभ	शनि	पूर्वभद्र	बृहस्पति	शुक्र	केतु



## समग्र मैत्री तालिका

### स्थायी मित्रता

ग्रहों	सूर्य	चंद्रमा	मंगल ग्रह	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि ग्रह
सूर्य	--	दोस्त	--	तटस्थ	दोस्त	दुश्मन	--
चंद्रमा	दोस्त	--	--	दोस्त	तटस्थ	तटस्थ	--
मंगल ग्रह	दोस्त	दोस्त	--	दुश्मन	दोस्त	तटस्थ	--
बुध	दोस्त	दुश्मन	--	--	तटस्थ	दोस्त	--
बृहस्पति	दोस्त	दोस्त	--	दुश्मन	--	दुश्मन	--
शुक्र	दुश्मन	दुश्मन	--	दोस्त	तटस्थ	--	--
शनि ग्रह	दुश्मन	दुश्मन	--	दोस्त	तटस्थ	दोस्त	--

### अस्थायी मित्रता

ग्रहों	सूर्य	चंद्रमा	मंगल ग्रह	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि ग्रह
सूर्य	--	दोस्त	--	दोस्त	दोस्त	दोस्त	--
चंद्रमा	दोस्त	--	--	दुश्मन	दोस्त	दुश्मन	--
मंगल ग्रह	दुश्मन	दुश्मन	--	दुश्मन	दुश्मन	दोस्त	--
बुध	दोस्त	दुश्मन	--	--	दोस्त	दोस्त	--
बृहस्पति	दोस्त	दोस्त	--	दोस्त	--	दोस्त	--
शुक्र	दोस्त	दुश्मन	--	दोस्त	दोस्त	--	--
शनि ग्रह	दोस्त	दोस्त	--	दोस्त	दुश्मन	दोस्त	--

## समग्र मैत्री तालिका

पांच प्रकार की मित्रता

ग्रहों	सूर्य	चंद्रमा	मंगल ग्रह	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि ग्रह
सूर्य	--	अंतरंग	--	दोस्त	अंतरंग	तटस्थ	--
चंद्रमा	अंतरंग	--	--	तटस्थ	दोस्त	दुश्मन	--
मंगल ग्रह	तटस्थ	तटस्थ	--	कट्टर दुश्मन	तटस्थ	दोस्त	--
बुध	अंतरंग	कट्टर दुश्मन	--	--	दोस्त	अंतरंग	--
बृहस्पति	अंतरंग	अंतरंग	--	तटस्थ	--	तटस्थ	--
शुक्र	तटस्थ	कट्टर दुश्मन	--	अंतरंग	दोस्त	--	--
शनि ग्रह	तटस्थ	तटस्थ	--	अंतरंग	दुश्मन	अंतरंग	--

## विंशोत्तरी दशा - 1

राहु	
रवि	सितंबर 20 1987
शनि	जनवरी 04 2003
राहु	सितंबर 20 1987
बृहस्पति	फरवरी 12 1990
शनि	दिसंबर 18 1992
बुध	जुलाई 07 1995
केतु	जुलाई 24 1996
शुक्र	जुलाई 24 1999
सूर्य	जून 17 2000
चंद्रमा	दिसंबर 17 2001
मंगल	जनवरी 04 2003

बृहस्पति	
सोम	फरवरी 21 2005
मंगल	जनवरी 01 2019
बृहस्पति	फरवरी 21 2005
शनि	सितंबर 04 2007
बुध	दिसंबर 09 2009
केतु	नवंबर 15 2010
शुक्र	जुलाई 15 2013
सूर्य	मई 03 2014
चंद्रमा	सितंबर 02 2015
मंगल	अगस्त 08 2016
राहु	जनवरी 01 2019

शनि	
सोम	जनवरी 03 2022
सोम	दिसंबर 28 2037
शनि	जनवरी 03 2022
बुध	सितंबर 11 2024
केतु	अक्टूबर 21 2025
शुक्र	दिसंबर 20 2028
सूर्य	दिसंबर 02 2029
चंद्रमा	जुलाई 03 2031
मंगल	अगस्त 11 2032
राहु	जून 17 2035
बृहस्पति	दिसंबर 28 2037

बुध	
शुक्र	मई 25 2040
बुद्ध	दिसंबर 23 2054
बुध	मई 25 2040
केतु	मई 22 2041
शुक्र	मार्च 21 2044
सूर्य	जनवरी 25 2045
चंद्रमा	जून 26 2046
मंगल	जून 23 2047
राहु	जनवरी 09 2050
बृहस्पति	अप्रैल 15 2052
शनि	दिसंबर 23 2054

केतु	
शुक्र	मई 21 2055
गुरु	दिसंबर 22 2061
केतु	मई 21 2055
शुक्र	जुलाई 20 2056
सूर्य	नवंबर 25 2056
चंद्रमा	जून 26 2057
मंगल	नवंबर 22 2057
राहु	दिसंबर 10 2058
बृहस्पति	नवंबर 16 2059
शनि	दिसंबर 25 2060
बुध	दिसंबर 22 2061

शुक्र	
बुद्ध	अप्रैल 22 2065
बुद्ध	दिसंबर 17 2081
शुक्र	अप्रैल 22 2065
सूर्य	अप्रैल 22 2066
चंद्रमा	दिसंबर 21 2067
मंगल	फरवरी 19 2069
राहु	फरवरी 19 2072
बृहस्पति	अक्टूबर 19 2074
शनि	दिसंबर 18 2077
बुध	अक्टूबर 17 2080
केतु	दिसंबर 17 2081

## विंशोत्तरी दशा - 2

सूर्य		चंद्रमा		मंगल	
सोम	अप्रैल 06 2082	रवि	अक्टूबर 17 2088	बुद्ध	मई 14 2098
गुरु	दिसंबर 18 2087	सोम	दिसंबर 16 2097	मंगल	दिसंबर 16 2104
सूर्य	अप्रैल 06 2082	चंद्रमा	अक्टूबर 17 2088	मंगल	मई 14 2098
चंद्रमा	अक्टूबर 06 2082	मंगल	मई 18 2089	राहु	जून 01 2099
मंगल	फरवरी 11 2083	राहु	नवंबर 17 2090	बृहस्पति	मई 08 2100
राहु	जनवरी 06 2084	बृहस्पति	मार्च 18 2092	शनि	जून 17 2101
बृहस्पति	अक्टूबर 24 2084	शनि	अक्टूबर 17 2093	बुध	जून 14 2102
शनि	अक्टूबर 06 2085	बुध	मार्च 18 2095	केतु	नवंबर 10 2102
बुध	अगस्त 12 2086	केतु	अक्टूबर 17 2095	शुक्र	जनवरी 10 2104
केतु	दिसंबर 18 2086	शुक्र	जून 16 2097	सूर्य	मई 17 2104
शुक्र	दिसंबर 18 2087	सूर्य	दिसंबर 16 2097	चंद्रमा	दिसंबर 16 2104

### वर्तमान चल रही दशा

दशा नाम	ग्रहों	आरंभ करने की तिथि	अंतिम तिथि
महादशा	शनि	सोम जनवरी 07 2019 रात 12:00 बजे	गुरु जनवरी 07 2038 रात 12:00 बजे
अंतर्दशा	बुध	रवि जनवरी 09 2022 शाम 8:00 बजे	गुरु सितंबर 19 2024 रात 12:00 बजे
पर्यातर्दशा	शनि	मंगल अप्रैल 16 2024 सुबह 7:58 बजे	गुरु सितंबर 19 2024 रात 12:00 बजे
शुक्रशमदाशा	शुक्र	मंगल जून 11 2024 रात 2:42 बजे	रवि जुलाई 07 2024 रात 1:23 बजे
प्रणादशा	बुध	सोम जुलाई 01 2024 शाम 8:50 बजे	शुक्र जुलाई 05 2024 दोपहर 1:03 बजे

\* नोट: सभी तिथियां दशा की समाप्ति तिथि दर्शाती हैं।

## कालसर्प दोष



राहु और केतु चंद्रमा के दो नोड हैं और उन्हें वैदिक ज्योतिष में पूर्ण ग्रह माना जाता है। अपने भारी कर्म प्रभावों के कारण इन्हें सबसे खतरनाक ग्रह माना जाता है। यदि सभी 7 ग्रह राहु और केतु के बीच स्थित हों तो काल सर्प योग बनता है।

अधिकांश कालसर्प दोष प्रभाव नकारात्मक होते हैं, जबकि कुछ सकारात्मक भी हो सकते हैं। राहु या केतु अचानक सकारात्मक परिवर्तन देते हैं जो बहुत बड़े होते हैं और रातोंरात या कुछ दिनों के भीतर हो सकते हैं।

एक चीटी

पनमुर्गी

Vasuki

Shankhpal

पद्मा

Mahapadma

Takshak

Karkotak

Shankhchoor

Ghatak

Vishdhar

Sheshnaag

आपकी कुडली में कालसर्प योग की उपस्थिति



कालसर्प दोष नहीं रहता

इस व्यक्ति के लिए कोई कालसर्प दोष नहीं है

## कालसर्प दोष प्रभाव

### कालसर्प दोष प्रभाव

आपकी कुंडली में शंखपाल कालसर्प योग विद्यमान है। इस कारण अच्छी शिक्षा प्राप्त करने में बाधाएं आ सकती हैं। बड़े प्रयासों के बाद सफलता मिल सकती है।

काल सर्प योग के कारण जातक संपत्ति या परिवर्तनीय संपत्ति की समस्याओं में घिरा रहता है। दाम्पत्य जीवन कष्टमय एवं अशांत रहता है। जातक पिता/माता के सुख से वंचित हो सकता है। जातक को नौकर-चाकर और वाहन का सुख नहीं मिलता है और उनके द्वारा कष्ट झेलना पड़ सकता है। काल सर्प योग के कारण जातक कई बार रोगों से पीड़ित होता है। चंद्रमा के प्रभाव से जातक का मन अशांत और बेचैन रहता है। जातक एक समय में कई काम करता है लेकिन सामान्यतः कोई भी पूरा नहीं हो पाता। इससे नुकसान होता है। जातक के मित्र उसे बार-बार धोखा देने का प्रयास करते हैं। कई अवसरों पर प्रतिष्ठा में गिरावट आती है या सम्मान में कमी आती है। काल सर्प योग के कारण जातक संपत्ति या परिवर्तनीय संपत्ति की समस्याओं में घिरा रहता है। इन सभी कमियों के बावजूद भी जातक अंततः सफलता प्राप्त करता है।

### दोष प्रभाव के उपाय

1. काल सर्प दोष निवारण पूजा की सलाह दी जाती है। रुद्राक्ष की माला पर महामृत्युंजय मंत्र का 108 बार जाप करने से जातक को कालसर्प योग से छुटकारा पाने में मदद मिलेगी। 'ओम तथंबकम यजामहे सुगंधिम पुष्टिवर्धनमा उर्वारुकमिव बंधनान् मृत्योर मुक्तिया माप्रतत्'।
2. घर में मोर का पंख रखने से कालसर्प योग का प्रभाव कम हो जाता है। बच्चे अपनी एकाग्रता के स्तर को बढ़ाने के लिए इसे अपनी किताबों में भी रख सकते हैं।
3. प्रत्येक शनिवार को शनिदेव की पूजा करने और शनिदेव के मूल मंत्र का जाप करने से कालसर्प योग का प्रभाव कम हो जाएगा। लोग शनिदेव को तिल और काले चने भी चढ़ा सकते हैं। 'ओम शनि चराय नमः'
4. काल सर्प दोष निवारण पूजा की सिफारिश की जाती है। काल सर्प योग से छुटकारा पाने के लिए काल सर्प योग यंत्र को अपने घर में शुभ महूरत में रखें। आप यंत्र को सक्रिय करने के लिए इस मूल मंत्र का जाप भी कर सकते हैं। 'ब्रह्मा मुरी त्रिपुरांतकारी भानुह शशिह भूमिसुतो बुद्धश्व'
5. नाग पंचमी पर पूजा करें और पूजा के बाद यह सुनिश्चित करें कि सपेरा सांप को खुले मैदान में छोड़ दे।
6. सामान्य शिव पूजा। यहां तक कि एक सामान्य शिव पूजा जहां भगवान शिव के एक निश्चित स्तोत्र का जाप किया जाता है, वह भी काल सर्प दोष के प्रभाव को कम कर देगा। इससे भगवान शिव प्रसन्न होंगे और जातक के जीवन से सभी समस्याएं दूर हो जाएंगी। पूजा में मंत्रों का जाप श्रद्धापूर्वक और मंत्रीचार के साथ करना चाहिए।
7. काल सर्प दोष निवारण पूजा करें। प्रत्येक सोमवार को उसी स्थान और समय पर एक मुट्ठी गेहूं, श्रीफल और 1, 2, 5 या 10 का सिक्का चढ़ाएं। इन सभी चीजों को चढ़ाते समय भगवान राम के नाम का जाप करें। सुनिश्चित करें कि आप प्रत्येक सोमवार को सिक्के का समान मूल्य लें। इस क्रिया चक्र को 21 सोमवार तक करें और इस योग से छुटकारा पाएं।

## मांगलिक



### मांगलिक दोष क्या है?

जब लड़के या लड़की की कुंडली में मंगल, सूर्य, शनि, राहु या केतु लग्न, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव या द्वादश भाव में हो तो इसे मांगलिक दोष कहा जाता है। लग्न में मंगल के स्थित होने पर मांगलिक दोष अधिक प्रबल माना जाता है, जबकि लग्न में मंगल चंद्रमा के साथ युक्त हो तो मांगलिक दोष अधिक प्रबल माना जाता है। यदि शास्त्रों के अनुसार लड़के और लड़की दोनों का मांगलिक दोष होता है यदि लड़कियों की शादी रद्द हो जाती है तो उन्हें सुखी वैवाहिक जीवन की गारंटी दी जाती है। दूसरी ओर, यदि इस मांगलिक दोष को रद्द नहीं किया गया तो उन्हें जीवन में अनावश्यक समस्याओं और बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए व्यक्ति को अपनी कुंडली का अच्छी तरह से मिलान करवाकर ही अपना वैवाहिक जीवन शुरू करना चाहिए। मांगलिक दोष ठीक से समाप्त होने के बाद जातक को शांतिपूर्ण और समृद्ध जीवन प्राप्त होगा।

लग्ने व्यये सुखे वापी सप्तमे वा अष्टमे कुजे ।  
शुभ दृग योग हिं च पीतम हिं न संशयम ॥

### मांगलिक विश्लेषण

### कुल मांगलिक प्रतिशत

%

### Manglik Report

आप 0% मांगलिक हैं। आपकी कुंडली में मौजूद मांगलिक दोष का प्रभाव बहुत ही कम होता है जो इसे अप्रभावी बना देता है। अतः आप मांगलिक नहीं हैं।

## मांगलिक विश्लेषण

### मकान पर आधारित

### पहलुओं पर आधारित

भाव 6 से राहु 12 वें भाव को देखता है

भाव 12 से केतु 4,8 वें भाव को देखता है

भाव 3 से शनि 12 वें भाव को देखता है

भाव 9 से मंगल 12,4 वें भाव को देखता है

### मांगलिक दोष के उपाय

- यदि दोनों पार्टनर मांगलिक हों तो यह दोष समाप्त हो जाता है। इसके सभी दुष्प्रभाव समाप्त हो जाते हैं और दोनों का दांपत्य जीवन सुखमय और मंगलमय हो सकता है।
- जब विवाह में एक व्यक्ति मांगलिक होता है, तो कुंभ विवाह नामक इस अनुष्ठान को करने से मंगल दोष के नकारात्मक प्रभावों को रद्द किया जा सकता है। हिंदू वैदिक ज्योतिष के अनुसार एक मांगलिक व्यक्ति का विवाह केले के पेड़, पीपल के पेड़ या भगवान विष्णु की चांदी/सोने की मूर्ति से कराया जाता है।
- सभी उपायों में से मंगलवार का व्रत करना भी एक कारगर उपाय माना जाता है। जो मांगलिक जातक इस दिन व्रत रखते हैं उन्हें केवल तुअर दाल ही खानी चाहिए।
- मांगलिक व्यक्तियों को मंगलवार के दिन नवग्रह मंत्र जिसे मंगल मंत्र के नाम से जाना जाता है, का जाप करना चाहिए। वे एक दिन में 108 बार गायत्री मंत्र या प्रतिदिन हनुमान चालीसा का जाप भी कर सकते हैं।
- नवग्रह मंदिरों में दर्शन करने से मंगल दोष के कारण होने वाले दुष्प्रभाव कम हो जाते हैं। सबसे लोकप्रिय मंदिर तमिलनाडु में स्थित हैं। कुछ गुवाहाटी, असम में भी स्थित हैं। मंदिर में धी का दीपक भी जलाएं।
- दाहिने हाथ की अनामिका उंगली में चमकीले लाल मूँगे के साथ एक सुनहरी अंगूठी पहनें। हालाँकि, इसे पहनने से पहले किसी विश्वसनीय ज्योतिषी से कुंडली चार्ट का अच्छी तरह से विश्लेषण करवा लें।

## साढ़ेसाती विश्लेषण



### साढ़ेसाती दोष क्या है?

साढ़े साती साढ़े सात साल की अवधि को संदर्भित करती है जिसमें शनि तीन राशियों से होकर गुजरता है, चंद्र राशि, एक चंद्रमा से पहले और एक उसके बाद। साढ़े साती तब शुरू होती है जब शनि जन्म चंद्र राशि से 12वीं राशि में प्रवेश करता है और तब समाप्त होती है जब शनि जन्म चंद्र राशि से दूसरी राशि छोड़ता है। चूँकि शनि को एक राशि पार करने में लगभग ढाई वर्ष लगते हैं, जिसे शनि की ढैय्या कहा जाता है, इसलिए तीन राशियों को पार करने में लगभग साढ़े सात वर्ष लगते हैं और इसीलिए इसे साढ़े साती के रूप में जाना जाता है। आमतौर पर साढ़ेसाती जीवन काल में कुण्डली में तीन बार आती है - पहली बचपन में, दूसरी युवावस्था में और तीसरी बुढ़ापे में। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। दूसरी साढ़ेसाती का प्रभाव पेशे, वित्त और परिवार पर पड़ता है। आखिरी बाला किसी भी अन्य चीज़ की तुलना में स्वास्थ्य को अधिक प्रभावित करता है।

### आपकी कुण्डली में साढ़ेसाती की वर्तमान स्थिति



#### साढ़ेसाती नहीं है

आप किसी भी शनि अवधि पर नहीं हैं

राशि	वृषभ
शनि वक्री	नहीं
विचार दिनांक	Wed Jul 03 2024
कुण्डली	कुंभ

## साढ़ेसाती विश्लेषण

राशि - कुंभ

शनि चिन्ह	शनि वक्र?	चरण प्रकार	आरंभ करने की तिथि	अंतिम तिथि	प्रकार
वृषभ	नहीं	अर्धाष्टम शनि	जून 09 2000	जनवरी 19 2001	छोटी पनोती
वृषभ	नहीं	अर्धाष्टम शनि	फरवरी 01 2001	जुलाई 25 2002	छोटी पनोती
वृषभ	हाँ	अर्धाष्टम शनि	जनवरी 06 2003	अप्रैल 11 2003	छोटी पनोती
सिंह	नहीं	कंटक शनि	नवंबर 04 2006	जनवरी 09 2007	छोटी पनोती
सिंह	नहीं	कंटक शनि	जुलाई 18 2007	सितंबर 11 2009	छोटी पनोती
कन्या	नहीं	अष्टम शनि	सितंबर 11 2009	नवंबर 16 2011	छोटी पनोती
कन्या	हाँ	अष्टम शनि	मई 15 2012	अगस्त 06 2012	छोटी पनोती
मकर	नहीं	साड़े साती - बढ़ रहा है	जनवरी 24 2020	अप्रैल 28 2022	पहला ढैया
कुंभ	नहीं	साड़े साती - शिखर	अप्रैल 28 2022	जुलाई 14 2022	दूसरा ढैया
मकर	हाँ	साड़े साती - बढ़ रहा है	जुलाई 14 2022	जनवरी 17 2023	पहला ढैया
कुंभ	नहीं	साड़े साती - शिखर	जनवरी 17 2023	मार्च 29 2025	दूसरा ढैया
मीन	नहीं	साड़े साती - घट रहा है	मार्च 29 2025	जून 02 2027	तीसरा ढैया
मीन	नहीं	साड़े साती - घट रहा है	अक्टूबर 22 2027	फरवरी 22 2028	तीसरा ढैया
वृषभ	नहीं	अर्धाष्टम शनि	अगस्त 05 2029	अक्टूबर 09 2029	छोटी पनोती
वृषभ	नहीं	अर्धाष्टम शनि	अप्रैल 16 2030	मई 30 2032	छोटी पनोती
सिंह	नहीं	कंटक शनि	अगस्त 26 2036	अक्टूबर 20 2038	छोटी पनोती
कन्या	नहीं	अष्टम शनि	अक्टूबर 20 2038	अप्रैल 11 2039	छोटी पनोती
सिंह	हाँ	कंटक शनि	अप्रैल 11 2039	जुलाई 09 2039	छोटी पनोती

## साढ़ेसाती विश्लेषण

राशि - कुंभ

शनि चिन्ह	शनि वक्र?	चरण प्रकार	आरंभ करने की तिथि	अंतिम तिथि	प्रकार
कन्या	नहीं	अष्टम शनि	जुलाई 09 2039	जनवरी 13 2041	छोटी पनोती
कन्या	हाँ	अष्टम शनि	फरवरी 22 2041	सितंबर 24 2041	छोटी पनोती
मकर	नहीं	साड़े साती - बढ़ रहा है	मार्च 02 2049	जुलाई 16 2049	पहला ढैय्या
मकर	नहीं	साड़े साती - बढ़ रहा है	नवंबर 30 2049	फरवरी 21 2052	पहला ढैय्या
कुंभ	नहीं	साड़े साती - शिखर	फरवरी 21 2052	मई 09 2054	दूसरा ढैय्या
मीन	नहीं	साड़े साती - घट रहा है	मई 09 2054	सितंबर 09 2054	तीसरा ढैय्या
कुंभ	हाँ	साड़े साती - शिखर	सितंबर 09 2054	फरवरी 01 2055	दूसरा ढैय्या
मीन	नहीं	साड़े साती - घट रहा है	फरवरी 01 2055	अप्रैल 03 2057	तीसरा ढैय्या
वृषभ	नहीं	अर्धाष्टम शनि	मई 24 2059	जुलाई 06 2061	छोटी पनोती
सिंह	नहीं	कंटक शनि	अक्टूबर 06 2065	फरवरी 13 2066	छोटी पनोती
सिंह	नहीं	कंटक शनि	जून 27 2066	दिसंबर 30 2067	छोटी पनोती
कन्या	नहीं	अष्टम शनि	दिसंबर 30 2067	जनवरी 09 2068	छोटी पनोती
सिंह	हाँ	कंटक शनि	जनवरी 09 2068	अगस्त 25 2068	छोटी पनोती
कन्या	नहीं	अष्टम शनि	अगस्त 25 2068	अक्टूबर 30 2070	छोटी पनोती
मकर	नहीं	साड़े साती - बढ़ रहा है	जनवरी 08 2079	अप्रैल 02 2081	पहला ढैय्या
कुंभ	नहीं	साड़े साती - शिखर	अप्रैल 02 2081	अगस्त 16 2081	दूसरा ढैय्या
मकर	हाँ	साड़े साती - बढ़ रहा है	अगस्त 16 2081	दिसंबर 29 2081	पहला ढैय्या
कुंभ	नहीं	साड़े साती - शिखर	दिसंबर 29 2081	मार्च 13 2084	दूसरा ढैय्या

## साड़े साती विश्लेषण

राशि - कुंभ

शनि चिन्ह	शनि वक्र?	चरण प्रकार	आरंभ करने की तिथि	अंतिम तिथि	प्रकार
मीन	नहीं	साड़े साती - घट रहा है	मार्च 13 2084	मई 14 2086	तीसरा ढैया
मीन	नहीं	साड़े साती - घट रहा है	नवंबर 27 2086	जनवरी 24 2087	तीसरा ढैया
वृषभ	नहीं	अर्धाष्टम शनि	जुलाई 07 2088	नवंबर 13 2088	छोटी पनोती
वृषभ	नहीं	अर्धाष्टम शनि	मार्च 28 2089	अगस्त 30 2090	छोटी पनोती
वृषभ	हाँ	अर्धाष्टम शनि	नवंबर 15 2090	मई 13 2091	छोटी पनोती
सिंह	नहीं	कंटक शनि	अगस्त 10 2095	अक्टूबर 03 2097	छोटी पनोती
कन्या	नहीं	अष्टम शनि	अक्टूबर 03 2097	दिसंबर 11 2099	छोटी पनोती
कन्या	हाँ	अष्टम शनि	अप्रैल 03 2100	सितंबर 06 2100	छोटी पनोती
मकर	नहीं	साड़े साती - बढ़ रहा है	फरवरी 13 2108	अगस्त 18 2108	पहला ढैया
मकर	नहीं	साड़े साती - बढ़ रहा है	नवंबर 06 2108	फरवरी 06 2111	पहला ढैया
कुंभ	नहीं	साड़े साती - शिखर	फरवरी 06 2111	अप्रैल 20 2113	दूसरा ढैया
मीन	नहीं	साड़े साती - घट रहा है	अप्रैल 20 2113	अक्टूबर 11 2113	तीसरा ढैया
कुंभ	हाँ	साड़े साती - शिखर	अक्टूबर 11 2113	जनवरी 10 2114	दूसरा ढैया
मीन	नहीं	साड़े साती - घट रहा है	जनवरी 10 2114	जुलाई 08 2115	तीसरा ढैया
मीन	नहीं	साड़े साती - घट रहा है	सितंबर 07 2115	मार्च 18 2116	तीसरा ढैया

## साढ़े साती प्रभाव एवं उपाय

### साढ़े साती उपाय

- साढ़े साती के उपाय निम्नलिखित हैं -

1. शनि मूल मंत्र का प्रतिदिन 108 बार जाप करें, 'ॐ शन शानिचार्यय नमः'
2. शनिवार को नवग्रह स्तोत्र से शनि मंत्र का 108 बार जाप करें, 'नीलंजनसंभासं रविपुत्रम् यमाग्रजं। छाया मार्तडसम्भूतम् तम नमामि शनैश्चराम्'
3. उपवास करें, केवल उड़द की दाल खाएं और शनिवार को शनि चालीसा का जाप करें
4. शनिवार के दिन गरीबों और शारीरिक रूप से अक्षम लोगों को उड़द की दाल और काले कपड़े दान करें
5. हनुमान जयंती या शनि अमावस्या पर हवन करके भी शनिदेव की पूजा की जा सकती है

## रत्न सुझाव

प्रत्येक ग्रह का अपना विशेष ज्योतिषीय रत्न होता है जो ग्रह के समान ही ब्रह्मांडीय रंग की ऊर्जा उत्सर्जित करता है। रत्न सकारात्मक किरणों के परावर्तन या नकारात्मक किरणों के अवशोषण द्वारा कार्य करते हैं। उपयुक्त रत्न पहनने से पहनने वाले पर संबंधित ग्रह के सकारात्मक प्रभाव में बृद्धि हो सकती है क्योंकि रत्न फ़िल्टर करता है और केवल सकारात्मक कंपन को पहनने वाले के शरीर में प्रवेश करने की अनुमति देता है।

### सुझाए गए रत्न

जीवन पथर



भाग्यशाली पथर



फॉर्च्यून स्टोन



नीला

लग्न या लग्न शरीर और उससे जुड़ी हर चीज, जैसे स्वास्थ्य, दीर्घायु, नाम, स्थिति, जीवन पथ आदि का प्रतीक है। संक्षेप में, यह पूरे जीवन का सार रखता है। इसलिए लग्न के स्वामी लग्नेश के अनुरूप रत्न को जीवन रत्न कहा जाता है। इसके फायदों और शक्तियों का पूरी तरह से अनुभव करने और उनका फायदा उठाने के लिए व्यक्ति को इस रत्न को जीवन भर पहनना चाहिए।

पत्ना

जन्म कुंडली का पांचवां घर एक और शुभ घर है। पंचम भाव बुद्धि, उच्च शिक्षा, संतान, अप्रत्याशित लाभ आदि का कारक है। यह भाव पूर्व पुण्य कर्मों यानी पिछले अच्छे कर्मों का स्थान भी है। इसलिए इसे शुभ भाव माना जाता है। पंचम भाव के स्वामी के अनुरूप रत्न को भाग्यशाली रत्न कहा जाता है।

दूधिया पथर

जन्म कुंडली के नौवें घर को भाग्य स्थान अर्थात् भाग्य का घर कहा जाता है। यह घर भाग्य, सफलता, योग्यता और उपलब्धियों, ज्ञान आदि से संबंधित है। यह वह घर है जो बताता है कि व्यक्ति पिछले जन्मों में किए गए अच्छे कर्मों के कारण किस फल का आनंद ले पाएगा। नवम भाव के स्वामी के अनुरूप रत्न को फॉर्च्यून स्टोन कहा जाता है।

## फॉर्चून स्टोन

### फॉर्चून स्टोन - नीलमणि



वज़न	3 से 4 कैरेट
उँगलिया	रिंग फिंगर
स्थानापन्न खिलाड़ी	बिल्लौर

ग्रह	शनि ग्रह
धातु	चांदी/प्लैटिनम्
दिन	शनिवार

अन्य विकल्प बिल्लौर, आयोलाइट, नीला पुखराज  
साथ नहीं पहनना है मोती, मूंगा, माणिक

### विवरण

शक्तिशाली ग्रह शनि द्वारा निर्देशित, नीला नीलमणि (नीलम), नवरत्न (9 ग्रह) के भीतर केंद्रीय रत्नों में से एक है। वफादारी और स्पष्टता से जुड़े, ये शक्तिशाली रत्न कोरंडम परिवार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं जहां नीलम नाम केवल कालातीत आधी रात की नीली विविधता का प्रतिनिधित्व करता है। टाइटेनियम और लोहे की उपस्थिति से रंग, ये सुरुचिपूर्ण रंग तब सबसे आकर्षक होते हैं जब वे मखमली, थोड़े बैंगनी नीले रंग के साथ आते हैं।

### ऊर्जावान अनुष्ठान एवं मंत्र

रत्न को चांदी या प्लैटिनम से बनी अंगूठी में धारण करना चाहिए और इसे शनिवार के दिन पानी से भरे तांबे के कटोरे में रखना चाहिए। इसे पीपल के पेड़ की जड़ में लगातार जल चढ़ाकर शनि मंत्र का जाप करते हुए धारण करना चाहिए।

|| Om Aim Hreem Shanecharaya Namah ||

### पहनने का समय

अंगूठी शनिवार को पहननी चाहिए, यह तब अधिक शुभ होता है जब शनि का कोई नक्षत्र भी चल रहा हो - पुष्य, अनुराधा और उत्तरा भाद्रपद। यदि नहीं तो शुक्ल पक्ष के शनिवार की सुबह सूर्यास्त से दो घंटे पहले।

## फॉर्च्यून स्टोन

फॉर्च्यून स्टोन - पञ्चा



वज़न	3, 6 या 7 कैरेट
उँगलिया	छोटी उंगली
स्थानापन्न खिलाड़ी	पेरीडोट

ग्रह	बुध
धातु	कोई भी धातु
दिन	बुधवार

अन्य विकल्प पेरीडोट, हरा गोमेद, हरा टूमलाइन  
साथ नहीं पहनना है पीला नीलम, मंगा, मोती

### विवरण

पञ्चा हरे रंग का एक रत्न है जो बेरिल रत्नों के परिवार से संबंधित है। यह रत्न दुर्लभ है क्योंकि दोषरहित पञ्चा पाना बहुत कठिन है। अधिकांश पञ्चे दोषपूर्ण होते हैं, जिनमें पंख जैसी दरार और समावेशन होते हैं। ऐसा पञ्चा ढूँढना मुश्किल है जो गहरे हरे रंग का हो, पूरी तरह से पारदर्शी हो, मखमली प्रतिबिंब और उच्च विशिष्ट गुरुत्व के साथ हो।

### ऊर्जावान अनुष्ठान एवं मंत्र

पहली बार अंगूठी पहनने से पहले इसे कुछ देर तक गाय के कच्चे दूध में डुबाकर रखना चाहिए। फिर इसे गंगाजल, झरने के पानी, वर्षा के पानी या तांबे के बर्तन में रखे पानी से धोना चाहिए। धोने के बाद अंगूठी को एक हरे कपड़े में रखना चाहिए जिस पर लाल चंदन, रोली या केसर से बुध यंत्र बनाया हुआ हो। कांसे की थाली पर बुध का उत्कीर्ण यंत्र या कांसे से बनी बुध की मूर्ति को हरे कपड़े पर जिस पर यंत्र बनाया गया है, स्थापित करना चाहिए। अंगूठी में स्थापित यंत्र और रत्न की पूजा बुध के मंत्र से करके करनी चाहिए।

|| ऊं बुम बुद्धाय नमः ऊं ||

### पहनने का समय

पञ्चा बुधवार के दिन खरीदना चाहिए जब सूर्य उत्तरायण में हो। सूर्योदय के दो घंटे बाद रत्न खरीदकर जौहरी को देना चाहिए। अंगूठी में पञ्चा तब स्थापित करना चाहिए जब आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, या रोहिणी नक्षत्र मौजूद हो - बुधवार, शुक्रवार या शनिवार को जब कन्या या मिथुन राशि का उदय हो रहा हो। अंगूठी पहनने का सबसे अच्छा समय दो घंटे बाद है सूर्योदय।

## फॉर्च्यून स्टोन

फॉर्च्यून स्टोन - डायमंड



वज़न	0.5 या 1 कैरेट
उँगलिया	अनामिका/छोटी उंगली
स्थानापन्न खिलाड़ी	दूधिया पत्थर

ग्रह	शुक्र
धातु	चाँदी/प्लैटिनम/सोना
दिन	बुधवार

अन्य विकल्प दूधिया पत्थर, सफेद नीलमणि, प्राकृतिक जिक्रोन  
साथ नहीं पहनना है पीला नीलम, पत्ता

### विवरण

आँखों को सबसे अधिक आकर्षक लगाने वाला हीरा अपने रंगों के खेल के लिए प्रसिद्ध है। प्रकाश के संपर्क में आने पर यह बहुत ही नाजुक नीला, लाल, या नीले और लाल रंग का मिश्रण चमकदार चमक उत्सर्जित करता है। मणि चमकदार और चकाचौंध है, और प्रकाश की चिंगारी उत्सर्जित करती है। एक बढ़िया हीरा दीप्तिमान, दीप्तिमान और आनंददायक होता है। यह आँखों के लिए चंद्रमा के समान सुखदायक है; यह सुंदर और शानदार है और इसमें स्पष्ट क्रिस्टल की स्वयं-चमकदार गुणवत्ता है। यह चमकीला है और चारों ओर इंद्रधनुषी रोशनी बिखेरता है। प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथों में आठ प्रकार के हीरों का उल्लेख है। वे हैं हंसपति, कमलापति, वसंती, वज्रनील, वनस्पति, शब्दमवज्र, तेलिया और संलोयी।

### ऊर्जावान अनुष्ठान एवं मंत्र

पहली बार अंगूठी पहनने से पहले इसे कुछ मिनट के लिए शुद्ध पानी में डुबोकर रखना चाहिए और फिर अंगूठी को शुद्ध पानी से निकालकर अगरबत्ती के चारों ओर 11 बार घुमाएं। हीरे की अंगूठी पहनने से पहले, इसे पूरी तरह से सक्रिय करने और इससे सर्वोत्तम लाभ प्राप्त करने के लिए 'ओम शुं शुक्राय नमः ओम' मंत्र का 108 बार जाप करें।

|| Om Shum ShukrayeNamaha Om ||

### पहनने का समय

शुक्रवार के दिन जब शुक्र वृष्ट, तुला या मीन राशि में हो तो हीरा खरीदना चाहिए। सुबह सूर्योदय से 11:00 बजे के बीच खरीदना चाहिए हीरा कम से कम 1 रस्तीका (.59 मीट्रिक कैरेट) वजन का होना चाहिए। सेटिंग चांदी, सफेद सोना या प्लैटिनम होनी चाहिए और रत्न दोषरहित होना चाहिए। रत्न उसी दिन जौहरी को दे देना चाहिए और अंगूठी बनवाकर रत्न को शुक्रवार के दिन प्रातः 5 से 7 बजे चन्द्रमा के नीचे स्थापित करना चाहिए।

## रुद्राक्ष रिपोर्ट



### कार्तिकेय रुद्राक्ष

ॐ ऐं लक्ष्मी श्रीं शक्ति ।  
कमलहारिणी हंसः स्वाहा ॥

आपको 8 पहनने की सलाह दी जाती है आपके स्वास्थ्य के लिए मुखी रुद्राक्ष। आप 6 और 7 पहन सकते हैं  
धन और समृद्धि के लिए मुखी रुद्राक्ष

छ: मुखी रुद्राक्ष, जिसे 6-मुखी रुद्राक्ष भी कहा जाता है, मुक्ति और संतान की इच्छा को पूरा करता है और इसे भगवान शंकर के पुत्र भगवान कार्तिकेय का रूप माना जाता है। शिव महापुराण के अनुसार, यदि कोई व्यक्ति इस रुद्राक्ष को विधिवत पहनता है और नियमित रूप से पूजा करता है, वह ब्रह्महत्या के पाप से छुटकारा पा सकता है।

इस मनके को पहनने से चेतना की दुनिया का विस्तार होता है और पहनने वाले की अपने आस-पास के सभी लोगों के साथ एकता और सद्ब्राव को बढ़ावा मिलता है। इसे घर में रखने से सदस्यों के बीच एकता और सद्ब्राव आता है।

## अनुकूल अंक

7

5

1

मूलांक संख्या

भाग्यांक

नाम संख्या

तटस्थ संख्याएँ

4,5,8

अनुकूल देव

हनुमान

अनुकूल उपरत्न

मोती

अनुकूल धातु

5 धातु मिश्र धातु

अनुकूल दिन

सोमवार

मूलांक संख्या

7

जन्म की तारीख

सोम जून 07 1999

अनुकूल पत्थर

बिल्ली की आंख

अनुकूल मंत्र

|| ओम केतुवे नमः ओम ||

आपका नाम

Sunil Kumar Suman

दुष्ट संख्याएँ

1,9

मैत्रीपूर्ण संख्याएँ

2,6,7

अनुकूल रंग

हरा पीला

कट्टरपंथी शासक

केतु

# अंकज्योतिष रिपोर्ट - 1

## आपके बारे में

आपका मूलांक 7, केतु (पश्चिमी ज्योतिष के अनुसार नेपचर) की रहस्यमय ऊर्जा से प्रकाशित है, जो आपको एक गहरी और आत्मविश्लेषणात्मक प्रकृति प्रदान करता है। ज्वार के उत्तर-चढ़ाव की तरह, आपके पास जीवन के रहस्यों की गहरी समझ और अपनी अंतरिक दुनिया के साथ एक मजबूत संबंध है। ज्ञान और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के लिए आपकी खोज एक प्रेरक शक्ति है, जो आपको सतह से परे अर्थ खोजने के लिए प्रेरित करती है।

नेप्च्यून के प्रभाव की तरह, आप अक्सर स्वप्निल और कल्पनाशील स्वभाव का प्रदर्शन करते हैं। आपका दिमाग रचनात्मक विचारों के लिए एक कैनवास है, और आप कलात्मक और बौद्धिक गतिविधियों की खोज में सांत्वना पाते हैं। आपकी गहरी अंतर्ज्ञान आपको उन सच्चाइयों को समझने की अनुमति देती है जो दूसरों से दूर हो सकती हैं, जिससे आपको दुनिया पर एक अनूठा दृष्टिकोण मिलता है।

आपकी यात्रा आत्म-खोज और आत्मनिरीक्षण में से एक है, जो ज्ञान की प्यास और गहरी सच्चाइयों की लालसा से चिह्नित है। हालाँकि आपका रहस्यमय स्वभाव कभी-कभी अलगाव की भावनाओं को जन्म दे सकता है, लेकिन इन्हीं क्षणों में आप अपने सबसे बड़े रहस्यों को उजागर करते हैं। अपने सहज उपहारों को अपनाना और अपनी अंतरिक गहराइयों में उतरना आपको गहन विकास और ज्ञानोदय के मार्ग की ओर ले जाएगा।

## ब्रत विधि

केतु के सकारात्मक प्रभाव को बढ़ाने के लिए जातकों को मंगलवार का ब्रत रखना चाहिए। इस दिन भूरे या बहुरंगी वस्त्र पहनने की सलाह दी जाती है। सात, सोलह या पच्चीस मंगलवार ब्रत रखा जा सकता है। शरीर पर चंदन या तेल का लेप लगाना और भगवान गणेश (गणपति) की पूजा करना लाभकारी होता है। केतु से संबंधित यंत्र पर केतु के बीज मंत्र का जाप करने की भी सलाह दी जाती है।

## अनुकूल स्वामी

इन जातकों को राह या भगवान गणेश की पूजा करनी चाहिए। भगवान गणेश के अट्टैसाक्षरी मंत्र 'ओम श्रीं ह्रीं ल्लीम ग्लौं गं गणपतये वर वरदा सर्वजन मे वशमानाय स्वाहा' को प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक दोहराना चाहिए। कम से कम एक सौ आठ बार, गणेश चतुर्थी के दिन भगवान गणेश को गणेश मोदक का भोग लगाना चाहिए। यह धार्मिक अभ्यास जातकों को विभिन्न बीमारियों और समस्याओं से बचाएगा। यदि यह संभव न हो तो उन्हें रोज सुबह भगवान गणेश की तस्वीर की पूजा करनी चाहिए।

## अनुकूल गायत्री मंत्र

केतु के सकारात्मक प्रभाव को बढ़ाने के लिए जातकों को सुबह गणेश गायत्री मंत्र का जाप करना चाहिए। मंत्र है:

बुध गायत्री मंत्र :

॥ॐ एकदन्त्याय विद्ध्व हे वक्तुण्डाय धीमहि तत्रो दंती प्रचोदयात्॥

## परिवार की खुशहाली के लिए ग्रह मंत्र जप

प्रतिदिन केतु मंत्र का जाप अनुकूल ऊर्जा को आकर्षित करने में मदद कर सकता है। इस मंत्र को दिन में कम से कम एक सौ आठ बार दोहराएं, और 1800 माला दोहराव पूरा करने की सलाह दी जाती है। मंत्र है:

॥ॐ श्रां श्रीं सौं सः केतवे नमः ॥ - जाप की संख्या: 18000

## अंकज्योतिष रिपोर्ट-2

### अनुकूल मंत्र जाप

प्रतिदिन सुबह भगवान गणेश का ध्यान करें और निम्नलिखित मंत्र का जाप करें:

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभा। निर्विघ्नं कुरु मे देवा सर्व कार्येषु सर्वदा।

### घर पर आपके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए यंत्र पूजा

केतु के सकारात्मक प्रभाव को बढ़ाने के लिए जातकों को केतु यंत्र बनवाना चाहिए। यंत्र को अस्तगंध स्थाही (केसर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन और रक्त या सफेद चंदन का मिश्रण) का उपयोग करके भोजपत्र के टुकड़े पर बनाया जा सकता है। इसे शुक्लपक्ष के मंगलवार को निकाला जाना चाहिए और फिर चांदी या तांबे के ताबीज में रखा जाना चाहिए। ताबीज को मंगलवार की सुबह चांदी की चेन या बहुरंगी धागे में पहना जा सकता है। ताबीज पहनने से पहले उसकी धूप और दीप से पूजा करनी चाहिए।

### आपके गुणों के बारे में

अंक 5 बुध ग्रह के प्रतीकवाद को दर्शाता है, और अपनी सभी विशेषताओं में बहुमुखी और परिवर्तनशील है। आप आसानी से दोस्त बना लेते हैं और लगभग किसी भी अन्य अंक के तहत पैदा हुए लोगों से जुड़ जाते हैं। लेकिन आपके सबसे अच्छे दोस्त वे हैं जो आपके ही मूलांक जैसे कि किसी भी महीने की 5, 14 और 23 तारीख को पैदा हुए हैं। आप मानसिक रूप से बहुत मजबूत हैं। आप अपनी घबराहट पर जीते हैं और उत्सेजना को कम करते हुए दिखाई देते हैं।

आप विचारों और निर्णयों में तेज़ हैं, और अपने कार्यों में आवेगी हैं, आप किसी भी प्रकार के परिश्रम से घृणा करते हैं और स्वाभाविक रूप से जल्दी से पैसा कमाने के सभी तरीकों में शामिल हो जाते हैं। आपमें आविष्कारों और नए विचारों से पैसा कमाने की गहरी भावना होती है। आप जन्मजात स्ट्रेबाज हैं जो स्टॉक एक्सचेंज लेनदेन में रुचि रखते हैं और आम तौर पर आप जो कुछ भी करते हैं उसमें जोखिम उठाने के लिए इच्छुक और तैयार रहते हैं। आपके चरित्र में अद्भुत लचीलापन है। आप तीव्रतम चमक से तेजी से उबरते हैं, बहुत लंबे समय तक कोई भी चीज उन पर प्रभाव नहीं डालती है जैसे कि उनका प्रतीक, त्वरित चांदी, जो पारा का प्रतिनिधित्व करता है, भाग्य का गुलाब उनके चरित्र पर कोई निशान नहीं छोड़ता है।

### अनुकूल वास्तु

केतु द्वारा शासित मूल नक्षत्र के लिए अनुकूल प्रवेश दिशा दक्षिण है। रसोईघर दक्षिण-पूर्व में, मुख्य शयनकक्ष दक्षिण-पश्चिम में और खुला क्षेत्र उत्तर-पूर्व में रखें। उत्तर-पूर्व कोने में शयनकक्ष और उत्तर-पश्चिम कोने में रसोई से बचें। दक्षिण-पश्चिम दिशा पर सबसे अधिक भार होना चाहिए और दक्षिण-पूर्व का कोना सबसे ऊँचा होना चाहिए। पश्चिम प्रवेश द्वार वाले मकानों से बचें।

उत्तर-पूर्व कोने में शयनकक्ष और उत्तर-पश्चिम कोने में रसोईघर से बचें

सबसे अधिक वजन दक्षिण-पश्चिम दिशा में होना चाहिए और दक्षिण-पूर्व सबसे ऊँचा होना चाहिए। पश्चिम प्रवेश द्वार वाले मकानों से बचें।

## लग्न रिपोर्ट

### लग्न रिपोर्ट : कुंभ



विशेषताएँ

स्थिर, हवादार, पश्चिम

भाग्यशाली रत्न

नीलमणि

भगवान्

शनि

प्रतीक

पानी वाहक

उपवास का दिन

शनिवार

|ॐ शनैश्चराय विद्धहे छायापुत्राय धीमहि तत्रो मंदः प्रचोदयात् ॥

कुंभ अपने अनुसंधान उन्मुख दृष्टिकोण के लिए जाना जाता है। आप किसी भी प्रयास या पहल में गहराई से उतरेंगे। आप विशेष रूप से चिकित्सा, वित्त, इंजीनियरिंग, शिक्षण, प्रशासन और दर्शन में अनुसंधान क्षेत्रों में बहुत अच्छा करेंगे। यदि लग्न है पीड़ित, आप जीवन में किसी भी चीज़ से संतुष्ट नहीं होते हैं और अपने असंतोष के कारण चिड़चिड़े हो जाते हैं। दूसरी ओर, कुंभ राशि के लोग सभी पहलुओं में बहुत देखभाल करने वाले और भाग्यशाली होते हैं क्योंकि उन्हें अपने जीवन में जो कुछ भी चाहिए वह मिलता है।

आपकी दूरदर्शी और नवोन्वेषी भावना आपको मानदंडों को चुनौती देने और प्रगतिशील विचारों की तलाश करने के लिए प्रेरित करती है। आप बौद्धिक स्वतंत्रता और परिवर्तन को महत्व देते हैं।

जबसे भगवन लग्नेश 3 गृह मे है। आप प्रतिभाशाली हाथों वाले व्यक्ति होंगे। आप प्रतिस्पर्धी नौकरियों में कामयाब होंगे और मानसिक श्रम के लिए शारीरिक श्रम को प्राथमिकता देंगे। आपको काम में बहुत प्रयास करना होगा। आप एक कार मैकेनिक बन सकते हैं। स्वभाव से अनुशासनात्मक, आप एक अच्छे आयोजक और संचारक होंगे। आप एक नवप्रवर्तनक और एक पूर्णतावादी भी हो सकते हैं। आपको अपने भाई-बहनों के साथ समस्या हो सकती है।

# लग्न रिपोर्ट

## आध्यात्मिक सलाह

अपनी आध्यात्मिक यात्रा में, अपनी विशिष्टता को अपनाएं और सामूहिक कल्याण के लिए प्रयास करें। ध्यान के माध्यम से अपने उच्च स्व से जुड़ें।

### सकारात्मक लक्षण

बौद्धिक

आविष्कारशील

मानवतावादी

अपरंपरागत

### नकारात्मक लक्षण

निर्लिप्त

जिद्दी

विलक्षण

निर्वैयक्तिक



# धन्यवाद

किसी भी प्रश्न के लिए कृपया संपर्क करें

Jyotisha Guru

Kudavelly, Akberpet Bhoompally, Siddipet, Telangana

<http://jyotishaguru.com>

[contact@JyotishaGuru.com](mailto:contact@JyotishaGuru.com)

[+919493638393](tel:+919493638393)